साहित्य और संस्कृति

व्यक्तिबोध से युगबोध

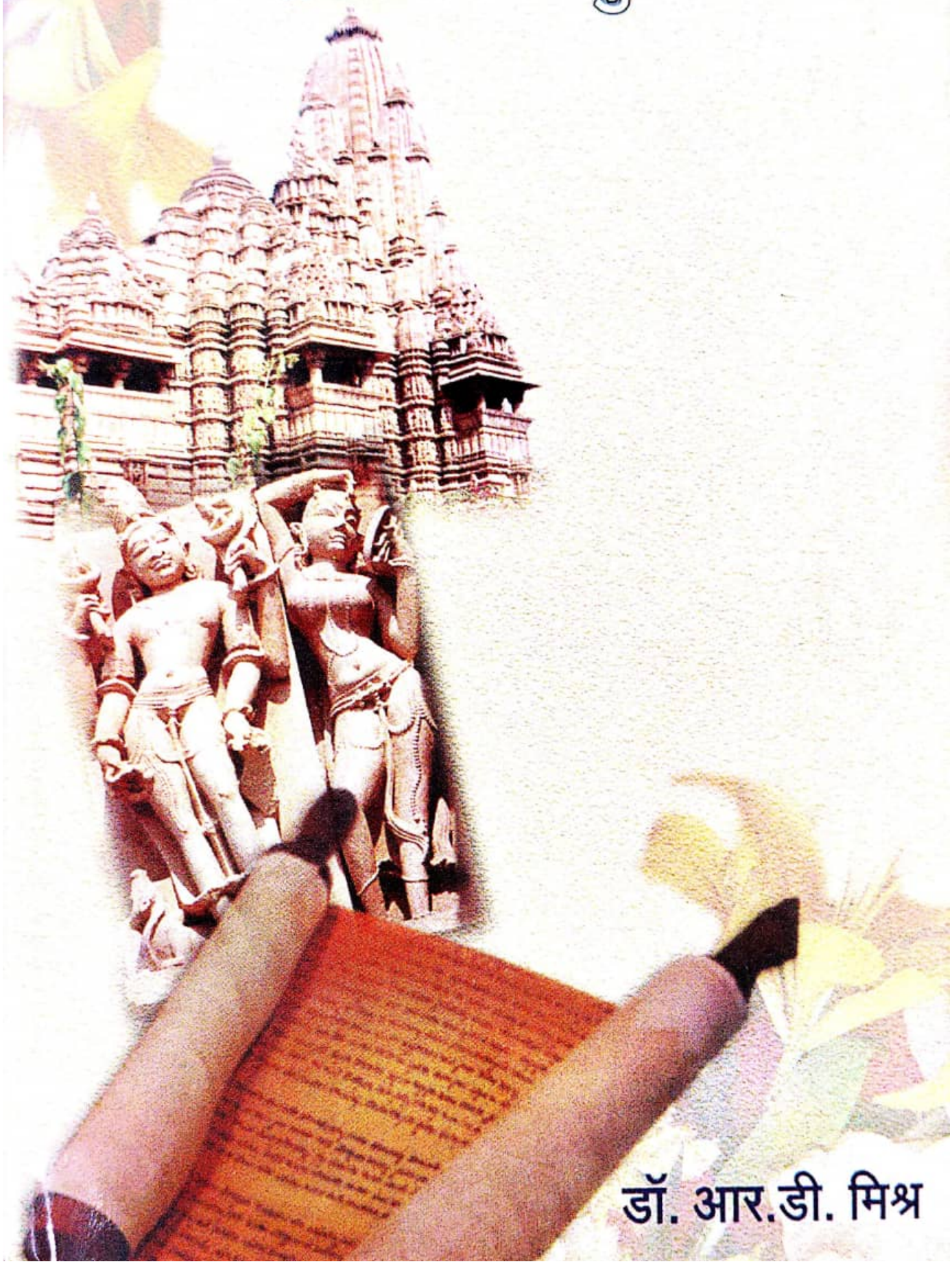

डॉ. आर.डी. मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

© लेखक

साहित्य और संस्कृति : व्यक्तिबोध से युगबोध

संस्करण – 2000
मुद्रित प्रतियाँ – 500

मूल्य– 300/– मात्र
ISBN-81-87725-03-6

प्रकाशक
आदित्य पब्लिशर्स
जागेश्वरी माता कॉम्पलेक्स
पाठक वार्ड, बीना (म.प्र.)
फोन (का.) 21372 (नि.) 20644

कम्पोजिंग
रेडियेन्ट कम्प्यूटर्स
5–सिविल लाइन्स, सागर

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

संस्कृति परम्परा : जीवन मूल्य

1 - 73

बिखरते मूल्यबोध, लोक संस्कृति के बदलते आयाम, बुन्देली लोक कला, संस्कृति के मूल्य मूल्यों की संस्कृति, अतीत की समृद्धिः संस्कृति का प्रश्न, सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्, यही भूमा का मधुमय दान, पंचमी से पंचमी तक, शक्ति की उपासनाः आस्था का सांस्कृतिक स्वर, शिव, बात भारतीयता की, प्रबुद्ध चेतना की अभिव्यंजना का नाम अहिंसा, गुरू की महिमा, पर्व और उनका बोध, पर्वों की सद्भावना, नारी, समवशरण रथ की प्रासंगिकता, जनजीवन में समाहित लोकोक्तियाँ, ईसुरी की फागें, सत्ता, सम्पत्ति और मानव, आधुनिकता, वैष्णव जन तो तेने कहिए, अश्वत्थामा आज भी जीवित है, युगदृष्टा कृष्ण

युग पुरुष : संस्कृति चेता : रचनाधर्मी

74 - 152

आलोक पुरुष राम, युगचेता मर्यादा पुरुषोत्तम, कर्मयोगी कृष्ण, क्रांति के प्रणेता बुद्ध, समन्वय की संस्कृति आस्था के आयाम, युग संस्कृति का परिप्रेक्ष्य : महावीर स्वामी, सामासिक संस्कृति की पृष्ठभूमि कबीर और जायसी, मोको कहाँ तू ढूँढै बंदे, आजादी की अर्द्धशती कबीर की प्रासंगिकता, गुरूनानक : अहिंसा का मूल्यबोध, सांस्कृतिक निर्भीकता के प्रतीक संत, ईशदूत ईसा, वीरत्व के प्रतीक तुलसी, शाश्वत शब्द ध्वनि, संस्कृति के शलाका पुरुष विवेकानंद, गुरूदेव : युगचेता : कविर्मनीषी, एक युगचेता की सांस्कृतिक दृष्टि, सम्वेदना का आक्रोश, गौर : व्यक्ति चेतना के आयाम, मेरी आवाज सुनो, गुलेरी की कहानियां, सखि वसंत आया, यदि निराला न होते, संस्कृति चेता : रचनाधर्मी, वर्णी जी एक युगचेता, मूक माटी के प्रणेता

राजनीति : धर्म अध्यात्म साहित्य

153 - 225

भारतीय राजनीति की नई सुबह, यह कौन रोता है वहाँ, ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि का आलोक पर्व, स्वर्ण जयंती का स्वर्ण, गणतंत्र दिवस पर, दान का दर्शन, लोकतंत्र का महाभारत, अभिशप्त हो गई माटी, पोखरण का शंखनाद, राष्ट्रगान राष्ट्रगीत, आपदा-विपदा, नया काव्य शास्त्रः साहित्य उन्मुक्ति का दस्तावेज, सौन्दर्य ही चेतना है, उतिष्ठित् जाग्रत, असंतोष का यह लावा, स्वार्धीन राष्ट्र की पराधीन चेतना, राष्ट्रीय चेतना से लगाव, अभिशप्त महत्वाकांक्षाएँ, स्वर्ण जयंती के परिप्रेक्ष्य में भारतीय लोकतंत्र, भीतर घात एक राष्ट्रीय समस्या, चुनावपूर्व का परिदृश्य, क्रांति की बात, गणतंत्र दिवस, संकल्प लेने का दिन, व्यक्तिबोध का दिवालियापन, मूल्य विघटन की यह बेला, विकलांग मानिसकता का दौर, खण्डित आस्थाएं : पराजित व्यक्तित्व, सहजता का सारल्य, भूकम्प

शेषलेखा : परिशिष्ट

226 - 263

रचनाकार की आस्था : समीक्षक का विश्वास, मैं तरुण हूँ ! जागरण की प्रथम रेखा हूँ !, उतिष्ठत् जाग्रत, शिक्षक विद्यार्थी संबंध, परिग्रह में वीतरागी : डॉ. गौर, डॉ. गौर : बुन्देली माटी की जीवंतता, डॉ. गौर : व्यक्ति चेतना के आयाम, विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती पर्व पर अतीत की कुछ रोचक झलकियां, निष्ठा की स्वर्ण जयंती का पर्व, सागर की साहित्य चेतना

Scanned with OKEN Scanner

आदित्य पब्लिशर्स

जागेश्वरी माता कॉम्पलेक्स,
पाठक वार्ड, बीना (म.प्र.) **470 113**
Ph. (O) 07580-21372, 21390 (R) 20644

मुद्रक : **अमृत ऑफसेट**, जबलपुर फोन : 317943

Scanned with OKEN Scanner